चिरविहाग

शशि तिवारी

चिरविहाग

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer (owner).

ISBN: 978-93-6026-057-6

Price: ₹ 342.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

चिरविहाग

शशि तिवारी

अर्ध्य

परब्रह्म की उस पराशक्ति को जो शिखरस्थ मानवता में शिव और कर्मठ ऊर्जा में शक्ति है।

इस आकांक्षा के साथ कि शिवत्व जड़ न हो और शक्ति उद्दाम।

– शशि तिवारी

लेखिका जीवन परिचय

श्रीमति शशि तिवारी जी कहानी,उपन्यास और काव्य जगत की शशक्त हस्ताक्षर थीं एवं आपकी प्रत्येक रचना सुउद्देश्य होती थी । नारी चेतना, सामाजिक समानता व प्राकृतिक संतुलन, भौतिक व पराभौतिक जगत में सामंजस्य आपका मुख्य प्रयास रहा है । आपका जन्म का जन्म 12 मई 1918 को दमोह म.प्र. में हुआ था। आपने प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर ,उच्च शिक्षा नागपुर से प्राप्त की एवं साहित्य रत्न इलाहाबाद उ.प्र. से किया था । आपकी अध्ययन में काफी रुचि,ज्ञान पिपासु व जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण काफी अंतराल के बाद आपने 1970 में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से एम.ए. हिंदी में मास्टर डिग्री प्राप्त की थी। जब आप कक्षा 9वीं में अध्ययनरत थीं तभी आपका विवाह भगवानदास तिवारी जी के साथ हो गया था। एक तरफ गृहस्थ संचालन का कर्तव्य,दूसरी ओर अध्ययन व लेखन कार्य में अत्यधिक रुचि, प्रारंभ से ही आपके मानसिक संतुलन,मेहनती सोच व समग्र कर्तव्यष्ठिा सिद्ध करती है। क्योंकि आपकी लेखनी भी कक्षा 9 वीं से ही प्रारम्भ हो चुकी थी, जिनमें मुख्यतः समाज की विसंगतियों का चित्रण रहता था। आपने सदैव दुख में सुख तलासने का प्रयास किया एवं पंद्रह वर्ष की उम्र में आपने पत्रिका प्रेमा व सहेली में कविता,लेख व कहानी लिखना प्रारम्भ कर दिया था। सहेली पत्रिका में आपकी प्रथम कहानी ‘‘उपहार’’ सन 1931 में सुभद्रा कुमारी चौहान जी की मदद से प्रकाशित हुई थी। तत्पश्चात तो लेखन का क्रम अनवरत क्रम से चल पड़ा ‘गिद्ध और सेवंती’ के फूल उस समय की बहु चर्चित कहानी रही जो उसी शीर्षक से कई शीर्षस्थ पत्रिकाओं में छप सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कहानियों में संकलित हुई। सन

1952 में राष्ट्रभारती पत्रिका में कहानी ''शेफाली'' प्रकाशित हुई जो की काफी चर्चित रही। उसके बाद आपको साहित्य गोष्ठियों से आमंत्रण आने लगे। बाद में आप परिवार सहित दुर्ग जिले के संजारी बालोद आ गई एवं यहीं से आपने पत्रिका धर्मयुग में लिखना प्रारम्भ किया इनकी कहानी, लाल रंग और नारी, जिसमें आपने नारी के जीवन में लाल रंग के महत्व को प्रतिपादित किया जिसके कारण भी आपकी काफी तारीफ हुई थी। शशि तिवारी जी को सन 1954 में सेवा सदन विद्यालय में उस समय के वरिष्ठ लेखक नाधों तामहणकर के साथ एक कथा लेखिका के रूप में आपका सम्मान किया गया। जबकि सन 1984 में मप्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भी आपकी हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया था । उस समय की आपकी हिन्दी साहित्य में विशेष दखल के कारण आपने अमृत राय ,यशपाल, कमलेश्वर, भीष्म शाहनी, अमरकांत, धर्मवीर, भारती जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ समय समय पर गोष्ठियों में भाग लिया । आपकी रचनाओं की वजह से ही धर्मवीर भारती जी ने आपको मुँह बोली बहिन बनाया था। स्व. पदुमलाल लाल बक्शी जी ने धर्मयुग में लिखा था कि छत्तीसगढ़ के जनजीवन कि महिमा का सच्चा चित्र शशि तिवारी जी की कहानी ''मोर नाम फुलवा'' में पाया एवं बक्शी जी ने अन्य जगह लिखा था कि शशि तिवारी जी ने सीमित लेकिन जानदार कहानियाँ लिखीं हैं व वर्तमान जीवन के विविध चित्र इनकी कहानियों मे आये हैं, ब्रदर बस यही है, में उन्होने महिलाओं कि स्थिति का सुंदर चित्रण किया है । स्व० पदुमलाल पुन्नालाल जी बख्शी ने धर्मयुग में इसी कहानी के लिए इन्हें छत्तीसगढ़ की महादेवी कहा था।

आपकी कहानी, टहस, भी अपने समय कि महत्वपूर्ण रचना रही जिस पर स्व. श्रीकांत जी ने अपनी प्रतिक्रिया दी थी कि इसका प्रत्येक वाक्य गठा हुआ है और बात कहने के ढंग में एक विचित्र प्रवाह है। इस प्रकार आपकी द्वारा लिखित कहानियाँ, नाग के पत्र, खोरिन, मुर्दे, अमरबेल, कन्हई ,टहस, नाम मोर फुलवा, मैं

धोबिन नाबाब कि, बहुचर्चित रहीं। आपने प्रथम उपन्यास, शेसाती सांझे, लिखा था लेकिन किसी कारण बस प्रकाशित नहीं हो पाया लेकिन आपका महाकाव्य ''चिरविहाग'' प्रथम संस्करण 1990 में प्रकाशित हुआ लेकिन ये महाकाव्य भी किसी परिस्थितियों के कारण बुद्धिजीवियों के पास तक नहीं पहुच पाया। आपकी कहानी ''कन्हई'' छत्तीसगढ आँचल की प्रथम कहानी थी, इसी आँचल पर लिखी कहानी ''मोर नाम फुलवा''जो कहानी विशेषांक में आई थी एवं रायपुर, जबलपुर, सागर विश्वविद्यालयों के स्नातक पाठ्यक्रमों में संकलित की गई थी।

जिस तरह शशि तिवारी साहित्यिक क्षेत्र में एक मजबूत स्तंभ कि तरह रहीं उसी प्रकार वे रेडियो वार्ता के क्षेत्र में भी विख्यात रहीं। जब शशि जी नागपुर में थीं उस समय आप लाइव रेडियो कार्यक्रम कि प्रमुख हिस्सेदार मानी जाती थीं। आपका सर्वाधिक चर्चित कार्यक्रम ''ब्रेन ट्रस्ट'' था जिसमें सर्वश्री प्रभाकर मचिवे, मुक्तिबोध जी, उदयशंकर भट्ट नरेश मेहता तथा डह्र लोकेश जी कि सहभागिता रहती थी ।

आपका अनुभव फलक विस्तृत रहा, आप समर्पित गृहणी के साथ साथ मध्यप्रदेश की जानी मानी सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण मानसिक रूप से कलम से जुड़ी रहीं, जिस कारण आप कई वर्षों तक मध्यप्रदेश लेखक संघ भोपाल की अध्यक्ष भी रहीं। शशि तिवारी जी लेखन के अलावा समाज सेवा को भी जीवन का एक अभिन्न अंग मानती थी व आपने सामाजिक कार्य को बखूबी निभाया भी। छत्तीसगढ़ में आपका नाम साहित्य व सामाजिक कार्यो के लिये वर्तमान समय में भी बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

आपका सामाजिक कार्यो में योगदान का सारांश

- सदस्य आकाशवाणी सलाहकार समिति नागपुर
- अध्यक्ष कल्याण योजना समिति दुर्ग

- सदस्य कांग्रेस कार्यकारिणी बिलासपुर
- प्रांतीय महिला संयोजक भारत सेवक समाज मप्र भोपाल।
- संभागीय महिला संयोजक प्रांतीय कांग्रेस भोपाल
- अध्यक्ष मप्र लेखक संघ
- संभागीय सदस्य रेल्वे खानपान निरीक्षण समिति बिलासपुर संभाग
- संरक्षक त्रिपुर सुन्दरी मंदिर बिलासपुर

जीवन ज्यामिति सीधी सरल रेख
अपना पराया कष्ट एक सा देख
सभी मिला सदा यहीं छूट जाएगा
जीव का समभाव ही साथ जाएगा

17 दिसंबर सन 1997 में आप भौतिक शरीर को त्याग सदैव के लिये चिर निद्रा में लीन हो गयीं एवं शिवशक्ति की उर्जा प्रवाह में विलीन हो गयीं ।

श्रद्धांजली

प्रकृति की मंशा के सामने सभी मानव बौने होते हैं। कोई कार्य कब होना, कैसे होना, कितना होना, किसके द्वारा पूर्ण होना ये नियति तय करती है? इसका प्रत्यक्ष प्रमाण ''चिर विहाग'' जो मेरी परमआदरणीय स्वर्गवासी माँ श्रीमति शशि तिवारी के दिल, दिमाग व आत्मा में कई वर्षों तक विचारों की ज्वाला धधकती रही, माँ शक्ति की कृपा से लेखनी प्रारम्भ हुई एवं चिर विहाग प्रथम संस्करण प्रकाशन कुछ समय पूर्व 1990 में हुआ था।

आज उस वायवीय उर्जा के अंश, मैं दीप्ति मिश्रा, मेरे दोनों बच्चे, बेटा श्री शुभम मिश्रा (सोनू) व बेटी श्रीमति सोनल शास्त्री, मेरी छोटी बहिन श्रीमति किरण अजय अग्निहोत्री व उनके बच्चे श्री अक्षय, श्रीमति अदिति,श्रीमति अक्षया व श्री अशेष अग्निहोत्री व अन्य सभी निकट संबंधियों की ओर से मेरी अम्मा श्रीमति स्व० शशि तिवारी व मेरे पिता स्व० श्री भगवनदास तिवारी को हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करते हैं एवं ये हमारा सौभाग्य है कि उनके ''चिरविहाग'' हिन्दी महाकाव्य जो उनकी मन,मस्तिष्क व आत्मा की विचार गंगा है आप सभी बुद्धिजीवियों के समक्ष भेजने का प्रयास कर रहीं हूँ जिसमें सर्वश्रेष्ठ व वास्तविक श्रद्धांजली शुभम मिश्रा अर्थात मेरे बेटे शुभम (सोनू) ने अपनी प्रिय नानी की प्रिय पुस्तक चिर विहाग के पुनः प्रकाशन के द्वारा दी है । लेखिका स्वर्गवासी श्रीमति शशि तिवारी (अम्मा) व पापा स्वर्गवासी भगवान दास तिवारी की हार्दिक इच्छा थी कि अम्मा की अनुपम कृति चिरविहाग प्रकाशित होकर सभी के समक्ष आये। मेरी माताजी व

पिताजी ने चिरविहाग प्रथम संस्करण के लिये काफी प्रयत्न किए थे यहाँ तक कि जमीन बेचकर पुस्तक की एक हजार प्रतियाँ भी छपवाई थीं परंतु अर्थाभाव, वृद्धावस्था व दौड़धूप न करपाने की असमर्थता की वजह से उसका उचित मूल्यांकन नहीं करवा पाये। उस समय अधिकतर लोगों ने काफी टीका टिप्पड़ी,मजाक भी उड़ाया था की इतना पैसा बरवाद करने की क्या जरूरत थी बच्चों को दे देना था उनके काम आता और उनमें से सीमित प्रतियाँ ही कुछ बुद्धिजीवियों के पास पहुच पाईं बाकी चिरविहाग की अधिकाँश प्रतियाँ बंडलों में समाधिस्थ अवस्था में ही रहीं व दीमकों की ग्रास बनी परंतु मेरे बेटे सोनू (जिसे अम्मा पुत्र की तरह चाहती थीं) के मन में ये बात थी, अवसर मिलते ही वो नानी की हार्दिक इच्छा पूरी करेगा। मैंने तो आशा ही छोड़ दी थी की, चिर-विहाग, कभी प्रकाशित होगी बल्कि चिरलुप्त हो जायेगी, हाँ यदि हमारी सबसे छोटी बहिन स्वर्गवासी ऋचा (मुन्नी) जिसकी मृत्यु अल्पायु में ही हो गई थी, जीवित होती तो संभावना थी की वो कुछ प्रयत्न अवश्य करती। क्योंकि वो हम दोनों बहिनों से अधिक प्रतिभाशाली, साहसी, व्यौहारिक और दृड़ निश्चय थी। लोगो कि मानसिकता के आधार पर हो सकता है की हमारे ये विचार सोनू को श्रेय देना उचित न लगे, शायद लोग सोचें की उसने पैसा कमा लिया है या हमारा बेटा है इसलिये हम उसे सारा श्रेय दे रहें हैं पर उसकी हमें फिक्र नहीं है क्योंकि ईश्वर व उसकी व्यवस्था से भी सभी लोग खुश व संतुष्ट कहाँ रहते हैं?

जहाँ तक हम लोगों की ईश्वरीय श्रद्धा व भौतिक आवश्यकताओं संबंधी सदैव यही सौच रही है कि-

साईं इतना दीजिये, जा मे कुटुंब समाय।
मैं भी भूंखा न रहूँ, साधू न भूखा जाए ।
अम्मा जी भी कृति में कहती हैं कि -
हमारे तुम्हारे
इसके उसके सबके

कष्ट हों एक
अन्न वही
जो भंडार न भर
भरे सब के पेट
मेरे गेह
सब को मिले भरपूर विश्राम
तुम्हारा घर सब को हो
सुखद स्वगृह समान
शिक्षा दो न दो
दो आर्शीवादी दीक्षा
हमें न डसे प्रमादी दर्प
न पर धन की हो इच्छा

समय-समय पर ईश्वर ने हमारी ये इच्छा हमेशा पूरी की । सोनू को इस कार्य के लिए उसे धन्यवाद देना शायद उचित नहीं होगा परंतु उसे आशीर्वाद देना चाहते है एवं भगवान से भी यही प्रार्थना करते हैं कि वो हमेशा लोगो को खुशियाँ बाँटता रहे ।

अब मैं, मेरे बेटे सोनू के मित्र आचार्य डॉ. रज्जन प्रसाद पटैल (लेखक,ज्योतिष व वैकल्पिक उपचारक दमोह मप्र) के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ और ह्रदय से धन्यवाद देती हूँ, जिन्होने इस पुस्तक के पुनः प्रकाशन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

अम्मा जी की निम्न पंक्तियों ने हम लोगों को जीवन में काफी मार्गदर्शन दिया व जीवन जीने की कला सिखाई।

मेरे तेरे ने मेटे संसार,
बिलगाओ के बहाव विकार,
न में,न मेरा कोई संसार,
हर जीव में प्रभु पराकार।
ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति,
सूर्य चंद्र तारे नक्षत्र,

देव दानव पशु पक्षी वृक्ष
सभी हैं ब्रह्म के बिखरे तत्व।

आशा है ''चिर विहाग'' जो कि मानवीय अव्यक्त पीड़ा की गूंज जन जन तक पहुँचकर, वैचारिक पोषण कर लोगो के मन,मतिष्क व आत्मा में एक अद्भुत ऊर्जा संचार करेगी, जो मेरी अम्मा जी का जीवन ध्येय रहा है।

आपके विचार, प्रतिक्रियाओं का ह्रदय से स्वागत है.....

श्रीमति दीप्ति मिश्रा

F-502
Neel Siddhi Splendour
CHS , Sec-15 CBD Belapur,Navi Mumbai
Web- www.chirvihag.in
Mail.Id- chirvihag.shashi@gmail.com

हम लोगों के जीवन का अविस्मरणीय पारिवारिक चित्र

पिता श्री भगवानदास तिवारी,किरण,दीप्ति,ऋचा

सोनू नाना जी के पास,अम्मा श्रीमति शशि तिवारी जी के गोंद में
अक्षय, अम्मा जी के पास सोनम

हमें क्यों छोड़ गये, भोगने ये संत्रास।
अपुनो से बिछुड़, जीने से बड़ा कौन संताप।

ब्रह्म-स्वर

लेखिका की कलम से .....

कृति के संबंध में कुछ कहना कृति की अवमानना के साथ ही उसकी सामर्थ्य पर प्रश्न भी है । कृति में स्वयं ही उद्‌घोषित होने की क्षमता होनी चाहिए ।

चिरविहाग एक विनम्र जिज्ञासु प्रश्न है ।

प्रश्न क्या मात्र कृतिकार का ही है ।....नहीं...कोटि कोटि पीड़ित मानवता का है ।

प्रबुद्ध मेधा कभी भी बांझ नहीं रही । चेतन में चेतना के चेतते ही प्रश्न भी चेते ही होंगे ।

संस्कारी मान्यता बाध्यता से वे बाहर भले ही न आ सके हों। विसंगत विषमताओं की जो प्रश्नाग्नि कल्पों सदियों से जन मानस में गुंगुआती रही है, भोपाल रिसन की त्रासद यातना पीड़ा ने उसी गुंगुआती अग्नि को धधका दिया । उसी धधकी अग्नि की एक कौंध है चिरविहाग ।

जिज्ञासु शिशु सा प्रश्नित है चिरविहाग कि हे अनाहद के सृष्टा! तुम्हारी ही सृजी सृष्टि में पीड़ा दुख दैन्य के साथ भोग वैभव का इतना वैषम्य क्यों? एक की शिखरस्थ ऐवरेस्टी ऊचाई

चिरविहाग

चिरविहाग एक विनम्र जिज्ञासु प्रश्न है ।

प्रश्न क्या मात्र कृतिकार (लेखिका) का ही है ? नहीं..नहीं...कोटि–कोटि पीड़ित मानवता का है ।

जिज्ञासु शिशु सा प्रश्नित है चिरविहाग... कि हे अनाहद के सृष्टा !

तुम्हारी ही सृजी सृष्टि में पीड़ा दुख दैन्य के साथ भोग वैभव का इतना वैषम्य क्यों ? एक की शिखरस्थ ऐवरेस्टी ऊँचाई को देखने मात्र से गर्दन ऐंठ जाय और दूसरे की खाई में झाँकते चेतना हिम हो जाये। चिरविहाग जन–जन कि भोग वाणी है जो कल्पना के वायवीय क्षेत्र में न विचर, ठोस भूमि का आधार लेता है। चिरविहाग उज्जवल मानवीय भविष्य जिज्ञासा का ही कोख जन्मा है। अनुनय विनय की परंपरागत मान्यताओं का सारा का सारा अनवरत प्रयास और ज्ञान विज्ञान की समस्त उपलब्धि और सोच ,सुख शांति के साथ जीवन यात्रा संपन्न कर अपनी मूल धारा से जुड़ना ही चिरविहाग है ।

Contact Mail ID:
chirvihag.shashi@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-057-6
9 789360 260576